International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 400-406

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 400-406
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-08-2020
Accepted: 22-09-2020

निधि मोहन कटियार
(शोध छात्रा), लखनऊ
विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
निधि मोहन कटियार
(शोध छात्रा), लखनऊ
विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत।

बराहमिहिर कृत होराशास्त्र में वर्णित नवग्रहों पर समीक्षात्मक दृष्टि

निधि मोहन कटियार

सार
आचार्य बराहमिहिर प्रणीत होराशास्त्र में वर्णित ग्रहों पर समीक्षात्मक दृष्टि डालने से पूर्व ब्रह्माण्ड में हमारे सौर परिवार के भौगोलिक स्वरूप पर प्रकाश डालना समीचीन प्रतीत होता है।

कूट शब्दः समीक्षात्मक दृष्टि, बराहमिहिर कृत, ब्रह्माण्ड, भौगोलिक स्वरूप, आन्तरिक ग्रह

प्रस्तावना
प्रस्तावना
सौर परिवार
इस ब्रह्माण्ड में बहुत से सौर परिवार विद्यमान है। सभी सौर परिवारों के मध्य में एक सूर्य होता है। यही सूर्य अपने परिवार का संचालक भी होता है। इसलिए सूर्य का परिवार ही सौर परिवार या सौर मण्डल होता है। उन्हीं में से एक हमारा भी सौर परिवार है। सौर परिवार के ग्रह, उपग्रह, धूमकेतु और उल्का प्रमुख सदस्य होते है। इन सदस्यों के मध्य में ग्रहों का स्थान सर्वोपरि है। वस्तुतः केवल हमारा ही सौर परिवार ऐसा है जहाँ पर जीवन विद्यमान है। जीवन युक्त सौर परिवार के अनुसंधान में वैज्ञानिक संलग्न हैं, अतः भविष्य में अवश्य ही उनका ज्ञान आगे के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होगा। हमारा सूर्य नौ ग्रहों के परिवार का मुखिया है। ये ग्रह हैं–बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो। इन ग्रहों में कम से कम 65 उपग्रह तथा सैकड़ो छुद्रग्रह हैं। सूर्य के ही परिवार में धूमकेतुओं और उल्कापिण्डों को भी माना जाता है। हमारी आकाशगङ्गा के केन्द्र से प्रायः 30,000 से लेकर 33,000 प्रकाशवर्ष दूर एक कोने में हमारा सौर परिवार स्थित है। गैस और धूल (अन्तरिक्ष धूल) की घूमने वाली पट्टी, जिसे आदि सौर निहारिका भी कह सकते हैं, से इसका जन्म हुआ। इस घूमने वाली पट्टी से ग्रहमण्डल के सभी सदस्यों की उत्पत्ति हुई। ग्रहों के लिए प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द 'Planet' ग्रीक शब्द 'प्लेनेटस' से निकला है। इसका अर्थ होता है, घुमक्कड़ या यायावर। आकाश में हमेशा स्थिर दिखाई देने वाले तारों से अलग ये ग्रह अपनी स्थिति बदलते रहते हैं, इसलिए इन्हें 'प्लेनेट' या 'घुमक्कड़' कहा जाता है। ग्रहों का विभाजन आन्तरिक तथा बाह्य ग्रहों के रूप में किया गया है। बुध, शुक्र, मंगल को आन्तरिक ग्रह तथा बृहस्पति, शनि, यूरेनस और प्लूटो बाह्य ग्रह है। पृथ्वी आन्तरिक ग्रहों में सबसे बड़ी और घनी है।

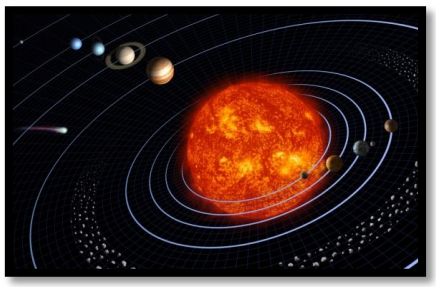

सभी आन्तरिक ग्रह घनी चट्टानों से बने हैं और इन्हें पार्थिव ग्रह कहा जाता है क्योंकि ये पृथ्वी के समान है। आन्तरिक ग्रहों में मात्र पृथ्वी और मंगल के ही उपग्रह है। बाह्य ग्रहों का एक बड़ा उपग्रहीय परिवार भी है। ये प्रायः हाइड्रोजन और हीलियम गैस से बने है। इनको बार्हस्पत्य या

जोवियन कहते है क्योंकि ये सभी ग्रह प्रायः बृहस्पति के ही समान हैं। 'जोव' ग्रीक भाषा में बृहस्पति को सूचित करता है। भारत में इसे गुरु कहा गया है। सौर–परिवार में सबसे भारी गुरुत्व बल वाला ग्रह यही है इसलिए इसे गुरु कहा गया। सभी बाह्य ग्रह तीव्र गति से घूमते हैं। इसका घना वातावरण भी है। ये आन्तरिक ग्रहों की अपेक्षा अधिक सूक्ष्म तत्त्वों से बने हैं। ये सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा दीर्घवृत्ताकार कक्षा में करते हैं। जिसकी अवधारणा पूर्वकाल में हमारे आचार्यों ने ग्रहों के उच्च और नीच को प्रदर्शित करते हुए की थी।[1]

सौर परिवार की उत्पत्ति

सौर परिवार की उत्पत्ति के विषय में उल्लिखित है कि ब्रह्माण्ड के सभी पदार्थों की उत्पत्ति हिरण्याण्ड से हुई है। इस सन्दर्भ में शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है–

''आपो ह वा इदमग्रे सलिलमेवास। ता अकामयन्त कथं नु प्रजायेमहि इति। ता अश्राम्यन् तास्तपोऽतृप्यन्त। तासु तपस्तप्यमानासु हिरण्याण्ड सम्बभूव। तदिदं यावत् संवत्सरस्य वेला, तावत् पर्यप्लवत, ततः संवत्सरे पुरुषः समभवत्। सः प्रजापतिः।[2]''

इसी प्रकार का वर्णन वायुपुराण में भी मिलता है। यथा–

''अन्तस्मस्मिस्त्विमे लोका अन्तर्विश्वमिदं जगत्।
चन्द्रादित्यो सनक्षत्रौ सग्रहौ सह वायुना।।
लोकालोकं च यत्किञ्चिच्चाण्डे तस्मिन् सर्पितम्।
आदि्भर्दशगुणाभिस्तु बाह्यतोऽण्डं समावृतम्।।[3]''

अर्थात् लोक, सम्पूर्ण जगत, चन्द्र, आदित्य, नक्षत्र, ग्रह, वायु के साथ सभी सन्निहित थे। प्रकाश और अन्धकार से युक्त जो कुछ था, उस अण्ड में था। लेकिन क्या यह महद् अण्ड एक ही था? क्या उस एक ही अण्डे से अनगिनत सूर्य, चन्द्र, तारे आदि उत्पन्न हुए? क्या सम्पूर्ण सृष्टि एक ही प्रजापति से उत्पन्न हुई?[4] इन सभी प्रश्नों का उत्तर विष्णुपुराण में उपलब्ध होता है। यथा–

''अण्डानां तु सहस्त्राणां सहस्त्राण्ययुतानि च।
ईदृशानां तथा तत्र कोटि–कोटिशतानि च।।[5]''

पुनः इसी प्रकार का प्रसङ्ग वायु पुराण में प्राप्त होता है। यथा–

''अण्डानामीदृशानां तु कोट्यो ज्ञेयाः सहस्रशः।
तिर्यगूर्ध्वमधस्ताच्च कारणास्याप्ययात्मनः।।[6]''

उक्त मतों के आधार पर ही पण्डित भगवद्दत्त महोदय कहते है कि यह अण्डे सहस्त्रों करोड़ थे। इन्हीं अण्डों का फल ये दूरस्थ सृष्टियाँ है। इस विचार की पुष्टि के लिए पं0 भगवद्दत्त महोदय ने अपनी पुस्तक वेद विद्या निदर्शन में ''डच'' ज्योतिषी का मत उद्धृत किया। यथा–

"The total number of stars in galactic system including the most distan and faint ones is estimated by the dutch astronomer kapteyu to whom we owe the most careful study of the milky way, to be about 40 billions[7]".

वैदिक साहित्य में ग्रह

नवग्रहों में राजा और रानी के पद पर अधिष्ठित सूर्य व चन्द्र का उल्लेख वेदों में अनेक स्थानों पर मिलता हैं। स्थान–स्थान पर देवता के रूप में इनसे प्रार्थनाएं की गई हैं। राहु और केतु अदृश्य हैं। अवशिष्ट भौमादि पांच ग्रह ही वास्तविक सूर्यमाला के ग्रह हैं परन्तु वेदो में इन पांचो अथवा इनमें से कुछ के विषय में स्पष्ट उल्लेख कहीं नहीं मिला, फिर भी अनुमान करने योग्य स्थल बहुत से हैं। ऋक्संहिता में लिखा है–

अमी ये पन्चोक्षणो मध्ये तस्थुरर्महो दिवः।
देवत्रा नु प्रावाच्यं सधीचीनानि वावृतुवित्तं मे अस्य रोदसी।[8]

अर्थात् ये जो महाप्रबल पांच (देव) विस्तीर्ण द्युलोक के मध्य में रहते हैं उनका मै स्तोत्र बना रहा हूँ। वे सब एक साथ आने वाले थे किन्तु आज वे सब चले गये हैं।

इस मन्त्र में देव शब्द प्रत्यक्ष नही है तथापि पूर्वापर सम्बन्ध से ज्ञात होता है कि वह विवक्षित अवश्य हैं। यहाँ 'ये सब एक साथ आने वाले थे' इस पद का प्रयोग किया गया है इससे भौमादि पांच ग्रह सिद्ध होते हैं। यहॉ ये एक साथ आने वाले कहे गये हैं परन्तु आकाश में इन पांचों के एक साथ दिखाई देने का प्रसंग बहुत कम आता है और बुध शुक्र तो आकाश के मध्य में कभी भी दिखायी नही देते पर 'दिवः मध्ये' का अर्थ 'आकाश में' भी हो सकता है और केवल अस्तगंत ग्रह को छोड़कर रात भर में किसी न किसी समय उन पांचों का दर्शन हो ही जाता है। वेदमन्त्रों में देव शब्द का अर्थ सृष्टि चमत्कार या प्रत्यक्ष तेज ही माना गया है और 'देव' शब्द का धात्वर्थ भी 'प्रकाश करने वाला'' ही है। अतएव सुस्पष्ट है कि प्रकाशयुक्त पाँच गह भौमादि ग्रह ही हैं। इसका अन्य कारण यह भी है कि वेदो में अश्विनी कुमारादि दो देव, द्वादश आदिव्यादि, द्वादश देव या तैतीस देवों का ही उल्लेख मिलता है। किन्तु पांच देव कही भी देव रूप में न तो प्रसिद्ध ही हैं और न ही कही इनका उल्लेख मिलता है। ऋक् संहिता में एक अन्य स्थान में भी पंचदेव शब्द आया है। अतः पंचदेवों का अर्थ पाँच ग्रह ही हो सकता है। उपरोक्त स्थान पर कहा गया है कि 'देवग्रहा वै नक्षत्राणि'[9] अर्थात पांच देवों का घर नक्षत्रमण्डल है। इस वाक्य से यह सिद्ध होता कि पाँच देव भौमादि पाँच ग्रहों के ही द्योतक हैं।

उदयकाल के अन्तिम भाग में ग्रहों के सम्बन्ध में ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से विभिन्न पहलुओं द्वारा विचार होने लगा था। ठाणांग नामक ग्रन्थ में अंगारक, व्याल, लोहिताक्ष, शनैश्चर, कनक, कनकवितान, कनक संतानक, सोमसहित, आश्वासन, कज्जोवग, कर्वट, अयस्कर, दुन्दुमुक, शंख, शंखवर्ण, इन्द्राग्नि, धूमकेतु, हरि, पिंगल, बुध, शुक्र, बृहस्पति, राहु, अगस्ति, भानवक्र, काश, स्पर्श, धुर, प्रमुख, विसन्धि, नियल, पयिल, जटिलक, अरुण, अगिल, काल, महाकाल, स्वस्तिक, सौवस्तिक, वद्वधमान, पुष्यमानक, अंकुश, प्रलम्ब, नित्यलोक, नित्योदयित, स्वयंप्रभ, उसम, श्रेयंकर, क्षेमंकर, आभंकर, प्रभंकर, अपराजित, अरज, अशोक, विगतशोक, विमल, विमुख, वितत, वित्रस्त, विशाल, शाल, सुव्रत, अनिवर्तक, एकजटी, द्विजटी, करकरीक, राजगल, पुष्पकेतु एवं भावकेतु आदि 88 ग्रहों के नाम बताये हैं।[10] समवायांग में भी उपर्युक्त 88 ग्रहों का समर्थन मिलता है–

'एगमेगस्सणं चंदिम सूरियस्स अट्ठासीइ अट्ठासीइ महग्गहा परिवारो प।'

अर्थात् एक चन्द्र और सूर्य का परिवार 88 महाग्रहों का है।

प्रश्नव्याकरणांग में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु या धूमकेतु इन नौ ग्रहों के सम्बन्ध में प्रकाश डाला गया है। अतएव उदयकाल के अन्त में ग्रहों का विचार शास्त्रीय दृष्टि से होने लग गया था।

शास्त्रीय ज्योतिष में ग्रह विचार

शास्त्रीय ज्योतिष में हमारे सौर परिवार के नौ ग्रहों–बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेपच्यून, और प्लूटो में से पाँच ग्रहो को बुध शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति को यथावत् स्वीकार किया गया हैं, किन्तु यूरेनस, नेपच्यून तथा प्लूटों को ग्रहो में परिगणित नहीं किया गया है। सूर्य जो कि एक तारा है और हमारा सौर जगत उसी के चारों ओर केन्द्रित है, को शास्त्रीय ज्योतिष में ग्रह माना गया है। चन्द्रमा जो कि सूर्य का उपग्रह है, इसे भी ग्रह माना गया है तथा राहु तथा केतु नामक दो छायाग्रहों को अन्य ग्रहो के समकक्ष माना गया है। राहु और केतु का भौतिक अस्तित्व

नहीं है, किन्तु सूर्य और चन्द्रमा के परिक्रमा पथ (वस्तुतः पृथ्वी का परिक्रमा पथ जो सूर्य का परिक्रमापथ प्रतीत होता है) के मध्य एक दूसरे को काटने वाले सूक्ष्म बिन्दुओ के रूप में गणितीय विधि से इनकी परिगणना की जाती है।

पृथ्वी से लाखों करोड़ों प्रकाशवर्ष दूर अन्तरिक्ष के अनन्त विस्तार में स्थित ये ग्रह किस प्रकार हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं, इसको प्रत्यक्ष देखा नहीं जा सकता। हज़ारों वर्ष पूर्व हमारे ऋषि, महात्माओं एवं मनीषियों ने अपने दिव्य चक्षुओं से ग्रहपिण्डों से निकलने वाली अमृत या विष रश्मियों का साक्षात्कार कर, उनके प्रभाव के आधार पर उन्हें शुभ ग्रह अथवा क्रूर व पाप ग्रह के रूप में चिन्हित किया। यदि वैज्ञानिक दृष्टि से देखे तो सूर्य, चन्द्र सहित अन्य सभी ग्रह अपने प्रकाश, विकिरण तथा विद्युत चुम्बकीय तरंगों से पृथ्वी वासियों को प्रभावित करते हैं। पूर्णमासी के दिन समुद्र की लहरो में आने वाले ज्वार भाटा के रूप में चन्द्रमा के प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

होराशास्त्र में ग्रहों पर समीक्षात्मक दृष्टि

आचार्य बराहमिहिर ने अपने ग्रन्थ होराशास्त्र के द्वितीय अध्याय 'अथग्रहयोनिप्रभेदाध्याय'' के अन्तर्गत शास्त्रीय ज्योतिष में वर्णित नवग्रहों का विवेचन किया हैं। इस अध्याय में आचार्य ने कालपुरूष के आत्मादि विभाग, ग्रहों के राजादि विभाग, ग्रहों के उपनाम, ग्रहो के रंग, ग्रहों का वर्णस्वामित्व, ग्रहों की प्रकृति व पंचतत्वों पर अधिकार, ग्रहों का ब्राह्मणादि वर्ण, ग्रहों का स्वरूप, ग्रहों का मज्जादि, ग्रहो के स्थान, वस्त्र दृव्य, ऋतु, गृहदृष्टि विचार, ग्रहों का कालादि निर्देश, गृहमैत्री विचार, निसर्गमैत्री का प्रदर्शन, पंचधा मैत्री विचार, ग्रहों का स्थानबल व दिग्बल, चेष्टाबल, कालबल व निसर्ग बल का विभिन्न छन्दों से सुशोभित 19 श्लोकों में विशद वर्णन किया हैं।

ग्रहों के नाम

ग्रह को संस्कृत भाषा में खेट, अरबी भाषा में सैयार और फारसी में सितारः कहते है। याज्ञवल्क्य स्मृति में नवग्रहों का स्पष्ट कथन है–

सूर्यः सोमो महीपुत्रः सोमपुत्रौ वृहस्पतिः।
शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुश्चैते ग्रहाः स्मृताः।।[11] (आचाराध्याय)

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, राहु व केतु ये क्रमशः नौ ग्रह होते हैं। इनमें से शनि, मंगल व क्षीण चन्द्र, पाप ग्रह तथा राहु क्रूर पापग्रह है। शेष पाप संग रहित बुध, गुरू, शुक्र तथा वर्धमान चन्द्रमा शुभ ग्रह है। पापग्रह या क्रूर ग्रह के साथ स्थित रहने पर बुध क्रमशः पापग्रह या क्रूरग्रह ही हो जाता है। जैसा कि **पाराशर** होराशास्त्र में महर्षि पाराशर ने कहा है–

अथ खेटा रविश्चन्द्रो मंगलश्च बुधस्तथा।
गुरूः शुक्रः शनी राहुः केतुश्चैते यथाक्रमम्।।[12]
तत्रंर्क–शनि–भूपुत्राः क्षीणेन्दु–राहु–केतवः
क्रूराः शेषग्रहा सौम्या, क्रूरः क्रूर युतो बुधः।।[13]

महर्षि पाराशर ने सूर्यादि सात ग्रहो के देवता इस प्रकार बताएं है सूर्य अग्नि, चन्द्र–जल, मंगल–कार्तिकेय, बुध–विष्णु, गुरू–इन्द्र, शुक्र–इन्द्राणी, शनि–ब्रह्मा यथा–

वहन्यम्बुशिखिजा विष्णुविडौजः शचिका द्विज।
सूर्यादीनां खगानां च देवा ज्ञेयाः क्रमेण च।।[14]

आचार्य बराहमिहिर ने भी होराशास्त्र में पाराशर मतानुसार ही ग्रहों के शुभत्व अशुभत्व तथा स्वामियों को स्वीकार किया है। यथा–
वह्न्यम्ब्वग्निजकेशवेन्द्रशचिकाः सूर्यादिनाथाः क्रमात्।।[15]

आकाश में ग्रहों की स्थिति

रात्रि के समय आकाश में जो तेजपुन्ज दिखते हैं वे निश्चल तारागण, गति रहित होने के कारण नक्षत्र कहलाते हैं। कुछ अन्य विपुल आकार वाले गतिशील तेज–पुन्ज अपनी गति के द्वारा निश्चल नक्षत्रों को पकड़ लेते हैं। अतः ये ग्रह कहलाते हैं। भचक्र में स्थित नक्षत्र वास्तव में स्थिर हैं, किन्तु उनमें स्थित ग्रह चलायमान है। अतः नक्षत्र, ग्रहों के माध्यम से ही गतिमान होते हैं। ग्रह यद्यपि पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर चलते हैं किन्तु प्रवहवायु से प्रेरित होकर पश्चिम से पूर्व की दिशा में चलते हुए प्रतीत होते हैं। राशिचक्र में स्थित बारह राशियों का क्षितिज में उदय लग्न कहलाता है। इसी लग्न के वश सूर्यादि ग्रह शुभाशुभ फल देते हैं। जैसा कि पाराशर ने कहा है–

तेजः पुन्जानु वीक्ष्यन्ते गगने रजनीषु ये।
नक्षत्रसंज्ञकास्ते तु न क्षरन्तीति निश्चलाः।।[16]
विपुलाकारवन्तोऽन्ये गतिमन्तो ग्रहाः किल।
चस्वगत्या भानि ग्रहणान्ति यतोऽतस्ते ग्रहाभिधाः।।[17]

कालपुरूष के आत्मादि तथा राजादि विभाग

आचार्य बराहमिहिर कृत होराशास्त्र (बृहज्जातक) के अनुसार सूर्य कालपुरुष की आत्मा, चन्द्रमा मन, मंगल सत्त्व, बुध वाणी, गुरु ज्ञान व सुख, शुक्र ज्ञान, सुख व कामशक्ति एवं शनि दुःख का प्रतिनिधि है। सूर्य व चन्द्रमा राजा, मंगल नेता या सेनापति, बुध राजकुमार, गुरु व शुक्र मन्त्री तथा शनि प्रेष्य या नौकर है। जन्म के समय जो ग्रह बली होगा व्यक्ति में उसी ग्रह के गुण अधिक स्फुट होंगे–

कालात्मा दिनकृन्मनस्तुहिनगुः सत्त्वं कुजो ज्ञो वचो,
जीवो ज्ञानसुखे सितश्च मदनो दुःखं दिनेशात्मजः।
राजानौ रविशीतगू क्षितिसुतो नेता कुमारो बुधः,
सूरि नवपूजितश्च सचिवौ प्रेष्यः सहस्रांशुजः।।[18]

सूर्य की बलवत्ता से आत्मा की बलवत्ता होती है। अतः जिसकी कुण्डली में सूर्य बलवान् हो, वह जीवित रहता है। आत्मबल, जीवनी शक्ति, जिजीविषा, महत्त्वाकांक्षा, स्वाभिमान अधिक होता है। चन्द्रमा की बलवत्ता से व्यक्ति के अन्तःकरण अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार की प्रधानता सूचित होती है। तब जातक दृढनिश्चयी, मजबूत इरादे वाला, धुन का पक्का होता है। मंगल बली हो तो जातक में सत्वगुण अधिक होगा अर्थात् जातक में दबंगपन, धीरता, निडरता, स्पष्ट वादिता, अन्याय के समक्ष न झुकने की प्रवृत्ति तथा स्वाभिमान कूट–कूट कर भरे होंगे। सत्त्व व्यक्तित्त्व का वह गुण है जिससे कष्ट या शोक में विह्वलता एवं प्रसन्नता में अतिशय उत्फुल्लता पर नियन्त्रण रहता है। अतः बलवान मंगल से जातक सत्त्वशील अर्थात् सुख व दुःख में अतिशय प्रसन्न या शोक मग्न नहीं होता है। यह महानता का लक्षण है।

बुध की बलवत्ता से वाक्कुशल होता है । 'सितश्च' शब्द में चकार के द्वारा बताया गया है कि गुरु व शुक्र दोनों ही समान श्रेणिक हैं तथा इनकी बलवत्ता से ज्ञान व सुख की वृद्धि होती है अर्थात् बृहस्पति बलवान् रहने से व्यक्ति ज्ञानवान् प्रतिभाशाली, निपुणकर्मा, सुविचारित कर्मा, महनीय कार्य करने वाला होता है। इसी प्रकार शुक्र बलवान् हो तब भी उक्त फल होता है। लेकिन शुक्र कामशक्ति, प्रजनन, स्त्री सुखादि का भी अतिरिक्त प्रतिनिधि है। प्रायः सभी टीकाकारों ने शुक्र को केवल काम का प्रतिनिधि माना है, जो उचित नहीं है। होराशास्त्र (बृहज्जातक) में कोई भी पद निरर्थक या पादपूरण मात्र प्रयोजन से या छन्द निर्वाहार्थ प्रयुक्त नहीं है। तब 'च' इसके प्रयोग से आचार्य ने गुरु व शुक्र की समकोटिकता तथा इन्हें युगपत् ज्ञान व सुख का प्रतिनिधि मानकर शुक्र को काम विभाग अतिरिक्त दिया है। जैसा कि रुद्रभट्ट ने अपनी टीका में कहा है–

सितश्च शुक्रोऽपि ज्ञान सुखे, किन्तु मदनः कामात्मकश्च।
कुछ लोग गुरु को केवल ज्ञान का एवं शुक्र को सुख का प्रतिनिधि भी मानते हैं, जो सर्वथा असंगत हैं। हमारे विचार से गुरु के साथ शुक्र भी समस्त भौतिक सुख व ज्ञान दोनों का प्रतिनिधि है। फलदीपिका में शुक्र को स्पष्टतया सम्पद, वाहन, भूषण, भार्यासुख, श्रीमन्तता, काव्य रचना, सचिव पद, सरस वाणी आदि का प्रतिनिधि कहा गया है।
शनि दुःख का कारक है। जन्म समय में जो ग्रह बलवान् हो, उससे सम्बन्धित बातों की वृद्धि होती है। निर्बल रहने पर हीनता होती है। शनि के विषय में विपरीत क्रम अपनाना चाहिए। यह निर्बल होने पर अधिक दुःख व बली होने पर दुःख का अभाव करता है। इसीलिए सारावलीकार ने कहा है–

आत्मादयो गगनगैलिभिर्बलवत्तराः।
दुर्बलै दुर्बलाः ज्ञेया विपरीतं शनेः फलम्।।[19]

सारावलीकार के उक्त श्लोक में बराह रचित पुस्तक लघुजातकम् में वर्णित श्लोक से भावसाम्य् स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है–

आत्मादयो गगनगैलिभिर्बलवत्तराः।
दुर्बलै दुर्बलाः ज्ञेया विपरीतः शनिः स्मृतः।।[20]

आत्मा व मन के प्रतिनिधि सूर्य व चन्द्रमा में से यदि एक भी बलवान् हो तो शेष ग्रहों के बल का पूरा फल मिलेगा। यदि सूर्य व चन्द्रमा बली हों तो शेष बातों की वृद्धि और अधिक दिखाई देगी। अतः सभी फलों में सूर्य व चन्द्रमा की महत्ता को ध्यान में रखना चाहिए। इसीलिए आचार्य ने बृहत्संहिता में कहा है–
आत्मा सहैतिमनसा मन इन्द्रियेण, स्वार्थेन चेन्द्रियगणः क्रम एवमेषः।
रुद्रभट्ट ने एक प्राचीन उदाहरण दिया है, जिससे सिद्ध है कि आत्मा एवं मनःभूत सूर्य व चन्द्र की बलवत्ता सब ग्रहों के फल दान की नींव है–

चन्द्राकौ बलयुक्तौ कुजादयःप्रोक्तमार्गबलहीनाः।
शुभफलदास्ते दशासु योगेषु संचिन्त्याः।।[21]

सब ग्रहों को उक्त क्रम से कहकर ग्रहों के वाराधिपत्य को भी आचार्य ने बता दिया है। दिनेशात्मज शब्द में दिनेश शब्द द्वारा इसी ओर संकेत है। अपि च शनि का उक्त पर्याय प्रयुक्त करके आचार्य ने विचित्र भणिति के द्वारा शनि के अंश (गुलिक) का भी दुःख विचार में प्रयोग करना बता दिया है।
राजादि विभाग में शुक्र व गुरु को एक साथ सचिव या मन्त्री बताया है। रुद्रभट्ट कहते हैं कि इनमें बृहस्पति कार्य मन्त्री तथा शुक्र नर्म सचिव अर्थात् कोमल, ललित विषयों के विभाग का मन्त्री है अथवा गुरु विदेश मन्त्री व शुक्र आन्तरिक कार्य (गृह) मन्त्री है। मन्त्री शब्द का अर्थ लक्षण ग्रन्थों में बताया गया है कि जो राज्य का एवं शत्रु–मित्र देशों के राज्य का भी एक साथ विचार करे तथा राजा से जिसका सख्यभाव हो वह मन्त्री है। इसी आधार पर राजा सूर्य व चन्द्रमा के मध्य जिस प्रकार श्रेणी विभाग करके सूर्य को प्रधानता प्राप्त है, तद्वत् शुक्र की अपेक्षा गुरु का अधिक महत्त्वपूर्ण साचिव्य माना जाता है। सूर्य को राजा व चन्द्र को रानी मानना चाहिए, ऐसी संगति भी विद्वानों ने मानी है।
इस प्रकार जन्म समय में जो ग्रह बलवान् हो तदनुसार ही जातक का स्वभाव होता है। सूर्य व चन्द्र के बली होने पर श्रेष्ठता राजसी स्तर वाला एवं शनि के निर्बल होने पर व्यक्ति दासवत् कार्य करने वाला होता है। तदनुकूल जातक की प्रवृत्ति, विचार व स्वभावादि होता है।
इसी प्रकार प्रश्न समय में जो ग्रह बलवान् होकर उपचय स्थानों में स्थित हो तो उसी ग्रह के स्तर वाले व्यक्ति की सहायता से कार्य सिद्ध होता है। जैसे सूर्य बली हो तो राजा के स्तर पर, गुरु शुक्र से सचिव या मन्त्री आदि की सहायता से, शनि हो तो दास अर्थात् तृतीय चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी की सहायता से अथवा इस प्रकार के स्वभाव वाले व्यक्ति की सहायता से कार्यसिद्धि होती है।
महर्षि पाराशर ने कालपुरूष के आत्मादि विभाग बराहमिहिर प्रणीत होराशास्त्र में वर्णित विभागों के समान ही माने है किन्तु उन्होने राहु केतु को सेना का प्रतिनिधि बताया है जो कि आचार्यकृत होराशास्त्र में वर्णित नही है। यथा–

प्रेष्यको रविपुत्रश्च सेना स्वर्भानुपुच्छकौ।
एवं क्रमेण वै विप्र सूर्यादीन् प्रविचिन्तयेत्।।[21]

सवार्थ चिन्तामणि तथा जातक पारिजात में उक्त विषयक वर्णन आचार्य प्रणीत होराशास्त्र से साम्य रखता है, जबकि फलदीपिका तथा ताजिक नीलकण्ठी इस विषय में मौन है।

ग्रहों के पर्याय या उपनाम
होराशास्त्र के अनुसार सूर्य को हेलि, चन्द्र को शीतरश्मि, बुध को हेम्ना या हेमा, वित्, ज्ञ, बोधन इन्दुपुत्र, मंगल को वक्र, क्रूर दृक, आर व आवनेय, शनि को कोण, सूर्यपुत्र मन्द व असित भी कहते हैं–

हेलिः सूर्यश्चन्द्रमा शीतरश्मिहेम्नाविद् ज्ञो बोधनश्चेन्दुपुत्रः।
आरो वक्रः क्रूर दृक चावनेयः, कोणोमन्दः सूर्यपुत्रोऽसितश्च।[22]

बृहस्पति के जीव, अंगिरा, सुरगुरु, वाचस्पति, वाक्पति व इज्य आदि, शुक्र के भृगु, भृगुसुत, सित, आस्फुजित् आदि, राहु के तम. अगु, असुर एवं केतु के शिखी ये पर्याय हैं–

जीवोऽंगिराः सुरगुरुर्वचसा पतीज्यः,
शुक्रो भृगुभृगुसुतः सित आस्फुजिच्च।
राहुस्तमोऽगुरसुरश्च शिखीति केतुः,
पर्यायमन्यदुपलभ्य वदेच्च लोकात् ।।[23]

सारावली में सूर्य को हेलि, चन्द्रमा को शशी, मंगल को क्रूर दृक्, क्षितिनन्दन, आर, रक्त, वक्र, बुध को हेम्न, विद्, ज्ञ, बोधन, गुरू को ईड्य ईज्य, अंगिरा, जीव, शुक्र को आस्फुजित्, सित्, भृगु, शनि को मन्द, कोण, यम व कृष्ण कहा गया है। श्लोक दृष्टव्य हैं–

हेलिर्भानुः शशिचन्द्रः क्रूरदृक क्षितिनन्दनः।
आरोरक्तस्तथावक्रो हेम्नोविद् ज्ञोबोधनः।।[24]
ईड्ये ज्यौ अंगिरा जीवो ह्यास्फुजिच्चसितो भृगुः।
मन्दः कोणो यमः कृष्णो विद्यादन्यानि लोकतः।।[25]

सवार्थ चिन्तामणि में ग्रहों के निम्न पर्यावाची बताये गये हैं–
सूर्य–हेलि, भानुमान् दीप्तरश्मि, चण्डांशु, भास्कर, अहस्कर आदि।
चन्द्र–अब्ध, सोम, चन्द्रमा, शीतरश्मि, शीतांशु, ग्लौ, मृगाङ्क, कलेश आदि।
मंगल–आर, वक्र, आवनेय, कुज, भौम, क्रूर, लोहिताङ्ग, पापी आदि।
बुध–विद्, ज्ञ, सौम्य, बोधन, चन्द्रपुत्र, चान्द्र, शान्त, श्यामगात्र, अतिदीर्घ आदि।
गुरु–जीव, अङ्गिरा, देवगुरु, प्रशान्त, वाचाम्पति, इज्य, त्रिदेवेशवन्द्य आदि।
शुक्र–भृगु, उशना, भार्गवसूनु, अच्छ, काण, कवि, दैत्यगुरु, सित आदि।
शनि–छायात्मज, पङ्गु, यम, अर्कपुत्र, कोण, असित, सौरि, शनि, नील, क्रूर, कृशाङ्ग, कपिलाक्ष, दीर्घ आदि।
राहु–तम, असुर, अगु, सैंहिकेय, स्वर्भानु, विधुन्तुद आदि।
केतु–शिख, ध्वज, शनि सुत, गुलिक, मान्दि, यमात्मज, प्राणहर, अतिपायी आदि। प्राणपद, असु, प्राण।

अब्दुर्रहीम खानखाना कृत खेटकौतुहम् में ग्रहों के पर्यायवाची इस प्रकार है–

	संस्कृत	अरबी	फारसी
सूर्य	रवि	शम्स	मिहिर, आफ़ताब, खुर, नय्यिर
चन्द्र	कुमुदबन्धु, निशाकर, शशि	क़मर	माहताब
मंगल	कुज, भूमिपुत्र, भौम	मिरीख़	जलोदफ़लक, ज़मीज, जलादुल फलक
बुद्ध	चन्द्रपुत्र	उतारिद	दबीरे फ़लक, दबीरूल फ़लक, माहताबस्य पुत्रः
बृहस्पति	देवगुरू, गुरू	मुश्तरी, बिरजीस	काज़िए फ़लक, देवपीर
शुक्र	दैत्यगुरू, भृगु, कवि	ज़ुहः, ज़ुद्धः	खुन्यागरे आसमां, चश्मकोरः (आँख का काना)दैत्यपीर
शनि	सूर्यपुत्र, खेटपुत्र	ज़ुहल	कैवां पीरे फ़लक, आफ़ताबस्य पुत्रः
राहु	तमः, तमसः	रास, ज़नब, जनुबल, फ़रस	अज्दहाए फ़लक
केतु	शिखी	तदैव	तदैव

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहू	केतु
उपनाम	हेलि	शीतरश्मि	आर वक्र क्रूरदृक् आवनेय	हेम्ना विद् ज्ञ बोधन इन्दुपुत्र	जीव अंगिरा सुरगुरू वचसांपति इज्य	भृगु भृगुसुत सित आस्फुजित	कोण मन्द असित	तम अगु असुर	शिखि
फारसी	शम्स आफताब	कमर	मिर्रीख	उतारद्	मुस्तदी	जुलही	जुहल्	रास	जनब
अंग्रेजी	Sun	Moon	Mars	Mer-cury	Jupiter	Venus	Sa-turn	Head Node	Tail Node

उल्लेखनीय है कि जातक पारिजातकार ने नव ग्रहों के नव उपग्रहों का उल्लेख भी किया है–

क्रमशः कालपरिधिधूमार्धप्रहराह्वयाः।
यमकण्टककोदण्डमान्दिपातोपकेतवः।।[26]

सूर्य–काल। चन्द्रमा–परिधि। मंगल–धूम। बुद्ध–अर्धप्रहर। गुरू–यमकण्टक। शुक्र–इन्दुचाप। शनि–मान्दि। राहु–पात। केतु–उपकेतु। ये 09 उपग्रह हैं।

ग्रहों के रंग

आचार्य कृत होराशास्त्र के अनुसार सूर्य का रंग रक्त श्याम, चन्द्र का गौर धवल, भौम का छोटा शरीर और रक्त गौर (कमल पुष्प सदृश), बुध का दूर्वा सदृश हरित श्याम, बृहस्पति का गौरवर्ण, शुक्र का श्याम और शनि का कृष्ण (काला) रंग होता है। जन्मकाल में जो ग्रह बलवान होता है, उसी के समान जातक का रंग समझना चाहिए–

रक्तश्यामो भास्करो गौर इन्दुर्नात्युच्चांगो रक्तगौरश्च वक्रः।
दूर्वाश्यामो ज्ञो गुरुगौरिगात्रः, श्यामः शुक्रो भास्करिः कृष्णदेहः।।[27]

वर्णबोधक चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वर्ण	रक्त-श्याम	गौर	रक्त-गौर	हरित-श्याम	गौर	श्याम	कृष्ण

इससे जन्म व प्रश्न के समय जातक या प्रश्न से सम्बद्ध व्यक्ति के वर्ण निश्चय में सहायता मिलती है। 'नात्युच्चागो' कहकर आचार्य ने एक विशेष अर्थ द्योतित किया है। उच्चस्थ मंगल का वर्ण लाल व नीचस्थ मंगल का रंग गोरा होता है। इसी तरह स्वक्षेत्री या मूलत्रिकोणी आदि में आनुपातिक ह्रास या वृद्धि कहनी चाहिए। इसी प्रकार सूर्य भी उच्चारोही होने पर लाल तथा नीच की तरफ बढ़ने पर क्रमशः साँवलापन पाने लगता है। रूद्रभट्ट ने भी ऐसा कहा है–

"भास्करः रक्तश्यामो भवति उच्चे रक्तः नीचे श्यामः। वक्रो नात्युच्चांगों उच्चे रक्तः नीचे गौरः।"

जातक पारिजात में शुक्र का रंग अत्यधिक गोरा कहा गया है, जबकि होराशास्त्र में आचार्य ने शुक्र का रंग साँवला (श्यामवर्ण) कहा है। चन्द्रमा को गौरवर्ण का और युवावस्था वाला बताया है। शनि का रंग काला है तथा नीचाभिमुख होने से साँवलापन बढ़ेगा। राहु का रंग बहुत नीली झलक वाला काला रंग व केतु का चित्रविचित्र बहुत से रंगों के मिश्रण से बनने वाला अलग सा रंग होता है। जन्म समय में लग्न नवांशेश, चन्द्र नवांशेश व बलवान ग्रह के रंग से जातक का वर्ण निश्चय किया जाता है।

सारावालीकार कहते हैं– 'ताम्रसितारुणहरितपीतविचित्रासिता इदानीम्।'[28]

अर्थात् सूर्य का ताम्र वर्ण, चन्द्रमा का सफेद, मंगल का लाल, बुध का हरा, गुरू का पीला, शुक्र का कई रंग मिश्रित, शनि का काला रंग है। जातक पारिजात और होराशास्त्र में सूर्य का रंग रक्त श्याम, गुरू का गौरवर्ण, शुक्र का श्याम वर्ण बताया गया है। किन्तु सारावली में सूर्य का ताम्र वर्ण, गुरू का पीला तथा शुक्र विचित्र वर्ण अर्थात् कई रंग मिश्रित कहा गया है, शेष वर्णन में साम्य है। यह भी अवलोकनीय है कि जातक पारिजात में केतु के रंग को चित्रविचित्र मिश्रित बताया गया है।

सवार्थ चिन्तामणि में सूर्य को रक्त, चन्द्र को श्वेत, मंगल को अति रक्त बुध को हरा, गुरू को सुवर्ण, शुक्र को चित्र और शनि को नील वर्ण का माना गया है–

'रक्त श्वेतोऽतिरक्तो हरितकनकरूक् चित्र लीलास्तुनाथा।।'[29]

पाराशर होराशास्त्र में भी शुक्र का चितकबरा वर्ण माना गया है। आचार्य बराहमिहिर ने ग्रहों के वर्ण स्वामित्व की दृष्टि से कहा है कि सूर्यादि ग्रह क्रमशः इन वर्णों के स्वामी होते हैं–ताम्र वर्ण, श्वेत, गहरा लाल, हरा, हल्दी के समान पीला, चित्र विचित्र एवं काला। यहाँ पर ग्रहों के रंग या वर्ण तथा ग्रहों के वर्ण स्वामित्व में अन्तर स्पष्ट है। ग्रहों के वर्ण स्वामित्व का अर्थ है कि ग्रह किन वर्णो के

स्वामी होते हैं। आचार्य प्रोक्त ग्रहों के वर्ण एवं ग्रहों के वर्ण स्वामित्व में सूर्य, गुरू और शुक्र के वर्ण एवं वर्ण स्वामित्व में अन्तर है।

ग्रह दृष्टि विचार

होराशास्त्र में आचार्य ने ग्रहों की दृष्टि के विषय में कहा है–

त्रिदशत्रिकोणचतुरस्रसप्तमानवलोकयन्ति चरणाभिवृद्धितः।
रविजामरेज्यरुधिराः परे च ये क्रमशो भवन्ति किल वीक्षणेऽधिकाः।।[30]

अर्थात् सभी ग्रह अपने अधिष्ठित स्थान से सातवें स्थान को देखते है किन्तु शनि, गुरू व मंगल क्रमशः तृतीय–दशम, पंचम–नवम एवं चतुर्थ–अष्टम स्थान को विशेषतया देखते हैं। आशय यह है कि सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शुक्र, शनि, राहु, केतु ये सभी ग्रह अपने स्थान से सावतें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं, जबकि शेष तीन ग्रहों (गुरू, शनि, मंगल) की यह विशेषता है कि ये सप्तम स्थान को तो पूर्ण दृष्टि से देखते ही है, साथ ही उक्त स्थानों पर भी पूर्ण दृष्टि रखते है अर्थात् शनि 3, 7 ,10 स्थानों पर, गुरू 5, 7, 9 स्थानों पर व मंगल 4, 7 ,8 स्थानों पर पूर्ण दृष्टि रखते हैं।

लघु जातक में भी आचार्य ने समानार्थी भाव व्यक्त किये हैं–

दशम–तृतीये नव–पंचमें चतुर्थष्टिमे कलत्रं च।
पश्यन्ति पादवृद्धया फलानि चैवं प्रयच्छन्ति।।[31]
पूर्णम्पश्यति रविजस्तृतीयदशमे त्रिकोणमपि जीवः।
चुतस्म्रं भूमिसुतः सितार्क बुधहिमकराः कलत्रं च।।[32]

सारावली, जातक पारिजात, तथा जातकालंकारः प्रभृति अन्यान्य प्रसिद्ध ग्रन्थों में उल्लिखित दृष्टि विचार एवं आचार्य के दृष्टि विचार में साम्य परिलक्षित होता है।

ग्रहमैत्री विचार

बराहमिहिर रचित होराशास्त्र में उल्लिखित ग्रहमैत्री विचार विषयक श्लोक इस प्रकार है–

जीवो जीवबुधौ सितेन्दुतनयौ व्यर्का विभौमाः क्रमाद,
वीन्दवर्का विकुजेन्द्विनाश्च सुहृदः केषांचिदेव मतम्।
सत्योक्तो सुहृदस्त्रिकोणभवनात् स्वात् स्वान्त्यधीधपाः,
स्वोच्चायुः सुखपाश्य लक्षणविधेर्नान्यैर्विरोधादिति।।[33]

यवनाचार्य के मतानुसार

श्लोक के पूर्वार्ध में आचार्य यवनों द्वारा मान्य ग्रहमैत्री बता रहे हैं। सूर्य का मित्र गुरू। चन्द्र के गुरू, बुध। मंगल के शुक्र, बुध। बुध के सूर्य रहित समस्त ग्रह गुरू के मंगल रहित सब ग्रह। शुक्र के सूर्य चन्द्र रहित सब ग्रह। शनि के मंगल, चन्द्र, सूर्य रहित सब ग्रह मित्र होते हैं। मित्र के अतिरिक्त ग्रह शत्रु होते हैं।

यवनमतोक्त ग्रहमैत्री चक्र

यवनमतोक्त ग्रहमैत्रीचक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	गुरु	गुरु बुध	शुक्र बुध	चन्द्र भौम-गुरु शुक्र-शनि	सूर्य चन्द्र बुध शुक्र-शनि	भौम बुध गुरु शनि	बुध गुरु शुक्र
शत्रु	चन्द्र भौम बुध शुक्र शनि	सूर्य भौम शुक्र शनि	सूर्य चन्द्र गुरु शनि	सूर्य	भौम	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र भौम

सत्याचार्य के मतानुसार

सत्याचार्य के मत से सूर्यादि सब ग्रहों के अपने–अपने मूलत्रिकोण भवन से द्वितीय, द्वादश, पंचम, नवम, अष्टम और चतुर्थ स्थान के स्वामी तथा अपने–अपने उच्च स्थान के स्वामी मित्र होते हैं। शेष अनुक्त राशियों के स्वामी शत्रु होते हैं तथा जिनकी एक राशि मित्र विभाग में व दूसरी राशि शत्रु विभाग की राशियों में पड़े तो वे सम ग्रह होते हैं।

सत्याचार्योक्त मित्रादि चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मूलत्रिकोण	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ
स्थानेशमित्र	२	२	२	२	२	२	२
स्थानेशमित्र	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
स्थानेशमित्र	५	५	५	५	५	५	५
स्थानेशमित्र	९	९	९	९	९	९	९
उच्च	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला
स्थानेशमित्र	८	८	८	८	८	८	८
स्थानेशमित्र	४	४	४	४	४	४	४

(निसर्ग मैत्री चक्र)

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चन्द्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चन्द्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्रशनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु
शत्रु	शुक्र शनि	–	बुध	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र मंगल

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सौर जगत् के नवग्रह मानव जीवन के विभिन्न अवयवों के प्रतीक हैं। इन नवग्रहों की क्रिया फल द्वारा ही जीवन का संचालन होता है। सूर्य और चन्द्रमा बौद्धिक और शारीरिक उन्नति अवनति के प्रतीक माने गये हैं।

आचार्य बराहमिहिर के सिद्धान्तों को मनन करने से ज्ञात होगा कि शरीरचक्र ही ग्रह कक्षावृत है। इस कक्षावृत्त के द्वादश भाग मस्तक, मुख, वक्षस्थल, हृदय, उदर, कटि, वस्ति, लिंग जंघा, घुटना, पिण्डली ओर पैर क्रमशः मेष, वृष मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन संज्ञक हैं। इन बारह राशियों में भ्रमण करने वाले ग्रहों में आत्मा–रवि, मन–चन्द्रमा, धैर्य–मंगल, वाणी–बुध, विवेक–गुरू, वीर्य–शुक्र और संवेदन–शनि है। तात्पर्य यह है कि बराहमिहिराचार्य ने सात ग्रह और बारह राशियों की स्थिति देहधारी प्राणी के भीतर ही बतलायी हैं। इस शरीरस्थित सौरचक्र का भ्रमण आकाशस्थित सौर मण्डल के नियमों के आधार पर ही हेाता है। ज्योतिषशास्त्र व्यक्त सौर जगत् के ग्रहों की गति, स्थिति आदि के अनुसार अव्यक्त शरीर स्थित सौर जगत् के ग्रहों की गति, स्थिति आदि को प्रकट करता है। इसीलिए इस शास्त्र द्वारा निरूपित फलों का मानव जीवन से सम्बन्ध है।

प्राचीन भारतीय आचार्यो ने प्रयोगशालाओं के अभाव में भी अपने दिव्य योगबल द्वारा आम्यन्तर सौर जगत् का पूर्ण दर्शन कर आकाशमण्डलीय सौर जगत् के नियम निर्धारित किये थे। उन्होने अपने शरीर स्थित सूर्य की गति से ही आकाशीय सूर्य की गति निश्चित की थी। इसी कारण ज्योतिष के फलाफल का विवेचन आज भी विज्ञान सम्मत माना जाता है।

संदर्भ सूची

1. मूल–ब्रह्माण्ड और सौर परिवार, पृ0 36, 37, 38 उद्धृतं–भुवनकोशतत्त्वमीमांसा, डा0 अनिल कुमार पोरवाल पृ0 59, 60
2. शतपथ ब्राह्मण 11.1.6.1–2. उद्धृतं–भुवनकोशतत्त्वमीमांसा, डा0 अनिल कुमार पोरवाल पृ0 61
3. वायुपुराण .4.73–75. उद्धृतं–भुवनकोशतत्त्वमीमांसा, डा0 अनिल कुमार पोरवाल पृ0 61
4. वेदविद्या निदर्शन पृष्ठ 81 उद्धृतं–भुवनकोशतत्त्वमीमांसा, डा0 अनिल कुमार पोरवाल पृ0 61
5. विष्णु पुराण .2.7.37 उद्धृतं–भुवनकोशतत्त्वमीमांसा, डा0 अनिल कुमार पोरवाल पृ0 61
6. मूल–वेदविद्यानिदर्शन, पृष्ठ 82 उद्धृतं–भुवनकोशतत्त्वमीमांसा, डा0 अनिल कुमार पोरवाल पृ0 62
7. ळण ळंउूंए जीम इपतजी ंदक कमंजी व िैनदण्.183 उद्धृतं–भुवनकोशतत्त्वमीमांसा, डा0 अनिल कुमार पोरवाल पृ0 62,
8. मूल–ऋक् संहिता 1.105.10 उद्धृतं–भारतीय ज्योतिष, नेमिचन्द्र शास्त्री
9. ऋक् संहिता 10/55/3
10. मूलठाणांग पृष्ठ 98–100 उद्धृतं–भारतीय ज्योतिष, नेमिचन्द्र शास्त्री पृष्ठ 61, 62
11. याज्ञवल्क्य स्मृति–आचाराध्याय
12. वृहत् पाराशर होराशास्त्र, ग्रहगुणस्वरूपाध्यायः, श्लोक संख्या–11
13. वृहत् पाराशर होराशास्त्र, श्लोक संख्या–12
14. वृहत् पाराशर होराशास्त्र, श्लोक संख्या–19
15. होराशास्त्र (बृहजातक), ग्रहयोनिप्रभेदाध्यायः, श्लोक संख्या–5
16. वृहत् पाराशर होराशास्त्र, ग्रहस्वरूपवर्णनाध्यायः, श्लोक–4, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी।
17. वृहत् पाराशर होराशास्त्र, ग्रहस्वरूपवर्णनाध्यायः, श्लोक–5, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी।
18. होराशास्त्र (वृहज्जातक), ग्रहयोनिप्रभेदाध्यायः, श्लोक संख्या–1
19. सारावली, ग्रहगुणाध्यायः, श्लोक सं0–2
20. लघुजातकम्, ग्रहबलाध्यायः, श्लोक सं0–2
21. वृहत् पाराशर होराशास्त्र, ग्रहयोनिप्रभेदाध्यायः, श्लोक सं0–16
22. होराशास्त्र, ग्रहयोनिप्रभेदाध्यायः, श्लोक सं0–2
23. होराशास्त्र, ग्रहयोनिप्रभेदाध्यायः, श्लोक सं0–3
24. सारावली, ग्रहगुणाध्यायः, श्लोक सं0–10
25. सारावली, ग्रहगुणाध्यायः, श्लोक सं0–11
26. जातक परिजात, ग्ररूपगुणाध्यायः, श्लोक सं0–6
27. होराशास्त्र, ग्रहयोनिप्रभेदाध्यायः, श्लोक सं0–4
28. सारावली, ग्रहगुणाध्यायः, श्लोक सं0–12
29. सवार्थ चिन्तामणि, राशि–ग्रहसंज्ञा विचारः, श्लोक–73
30. होराशास्त्र, ग्रहयोनिप्रभेदाध्यायः, श्लोक सं0–13
31. लघुजातकम्, ग्रहबलाध्यायः, श्लोक सं0–12
32. लघुजातकम्, ग्रहबलाध्यायः, श्लोक सं0–13
33. होराशास्त्र, ग्रहयोनिप्रभेदाध्यायः, श्लोक सं0–15